International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 1; Issue 4; April 2016; Page No. 73-75

नाट्य तत्वों की कसौटी पर मोहन राकेश कृत 'आषाढ़ का एक दिन'

डॉ० दर्शन पाण्डेय

सहायक प्रोफेसर, शिवाजी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत।

प्रस्तावना

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटककारों में मोहन राकेश का अग्रणी स्थान है। मोहन राकेश से पूर्व नाटक रंगमंचीय चेतना से निरपेक्ष केवल एक साहित्यिक रूप में मानकर लिखा जा रहा था, उसे पूर्ण रूप में रंगमंच से जोड़ने का श्रेय इन्हें जाता है। अपने केवल तीन नाटकों 'आषाढ़ का एक दिन', 'लहरों के राजहंस' तथा 'आधे अधूरे' द्वारा नाटक और रंगमंच को एक सूत्र में बाँधने का युगांतरकारी कार्य राकेश जी ने किया। 'आषाढ़ का एक दिन' स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाट्य साहित्य की एक महत्वपूर्ण कृति है, इसकी कथावस्तु एतिहासिक चरित्र कालिदास के अंतरंग जीवन से संबंधित है, किंतु मूलतः कवि के विख्यात होने से पूर्व उसकी प्रेयसी मल्लिका की कथा है। एक ऐसे निष्ठावान तथा समर्पित नारी की कथा, जो मात्र कवि कालिदास से अटूट प्रेम ही नहीं करती अपितु उसकी सफलता की कामना भी करती है। इसके अतिरिक्त भी अनेक आयाम इसमें हैं, जो नाटक को एकाधिक स्तर पर सार्थक और रोचक बनाते हैं। आलोच्य नाटक में नाटक के सभी मान्य आधुनिक तत्वों का राकेश जी ने उचित रूप से प्रयोग किया है। भारतीय एवं पाश्चात्य नाट्य शास्त्रियों ने नाटक के मुख्यतः निम्न तत्व निर्धारित किए हैं-

1. *कथावस्तु, कथानक या वस्तु योजना*
2. *पात्र अथवा चरित्र*
3. *कथोपकथन और संवाद योजना*
4. *देशकाल और वातावरण*
5. *भाषा शैली*
6. *उद्देश्य अथवा संदेश*
7. *रंगमंचीयता एवं अभिनेयता*

नाटक में कथानक का संगठन महत्वपूर्ण होता है, कथोपकथन पर अभिनय द्वारा ही कथानक का उद्घाटन होता है। आचार्यों ने कथानक के दो प्रमुख भेद किए हैं- १. आधिकारिक २. प्रासंगिक।[1] *आधिकारिक कथावस्तु नाटक की मुख्य कथा होती है, इसका संबंध फल प्राप्ति के कार्य से है। यह नाटक के प्रमुख पात्र या नायक आदि का आश्रय ग्रहण किए रहती है। जबकि प्रासंगिक कथाओं का उद्देश्य अधिकारिक कथावस्तु को विकसित करने में सहायता पहुंचाना है। प्राचीन काल में जब विज्ञान पूर्ण विकसित नहीं था, तब नाटक के समस्त कथानक को रंगमंच पर नहीं दिखाया जा सकता था, कुछ हिस्से को अभिनय द्वारा दिखाया जाता था और शेष की केवल सूचना दी जाती थी। इस आधार पर कथावस्तु के दो भेद हैं, १. दृश्य २. सूच्य। दृश्य कथावस्तु को अभिनय द्वारा रंगमंच पर दिखाया जाता है। सूच्य कथावस्तु की केवल सूचना दी जाती है। सूच्य कथावस्तु के साधनों को अर्थोपक्षेपक कहते हैं, ये पाँच माने जाते हैं- विष्कंभक, प्रवेशक, चूलिका, अंकमुख, अंकावतार। स्रोत के आधार पर इसके तीन भेद किए गए हैं,- १- प्रख्यात- पुराण, इतिहास अथवा जनश्रुति पर आधारित कथावस्तु २. उत्पाद्य- नाटककार कल्पना पर आधारित कथावस्तु ३. मिश्र- इतिहास और कल्पित दोनों कथानकों का मिश्रण हो।*[2] *नाटक में फल प्राप्ति के लिए किया जाने वाला कार्य व्यापार कार्य है, यह नाटक के प्रारंभ से लेकर अंत तक रहता है इसके पाँच भाग हैं, जिन्हें कथा संगठन अथवा कहते हैं, ये हैं-*

१-प्रारंभ- जब मुख्य फल की प्राप्ति के लिए औत्सुक्य जागृत होता है।
२-प्रयत्न- जिसमें फल प्राप्ति के लिए शीघ्रतापूर्वक कार्य किया जाता है।
३- प्राप्त्याशा- जहाँ आशंका और बाधाओं के साथ किंचित फल प्राप्ति की आशा बंधती है।
४-नियताप्ति- जिससे फल प्राप्ति का निश्चय हो जाता है,परंतु कार्य व्यापार चलता रहता है
५- इसमें उद्देश्य तथा सभी इच्छित फल की प्राप्ति हो जाती है।[3]

फल अथवा कार्य की प्राप्ति के लिए जो साधन होते हैं, वे अर्थप्रकृतियाँ कहलाती हैं। ये कथावस्तु को कार्य की ओर अग्रसर करती हैं, इनके पांच भेद बताए गए हैं- बीज, बिंदु पताका, प्रकरी, और कार्य। जबकि नाटक में कुछ स्थलों पर अवस्थाओं के साथ अर्थ प्रकृतियों का संयोग होता है, ऐसे स्थलों को संधियाँ कहते हैं, यह पांच हैं- मुख, प्रतिमुख गर्भ, विमर्श, निर्वहण।

'आषाढ़ का एक दिन' नाटक की कथावस्तु किन्हीं नियमों में बंधकर नहीं चली है, अपितु इसमें पर्याप्त परिवर्तन है। यद्यपि कथानक का विभाजन तीन अंको में है, लेकिन अंको में अलग से दृश्य विभाजन नहीं है। नाटक का कथानक उत्पाद्य है, जिस पर इतिहास केवल छाया स्वरूप है। कथानक रोचक, मौलिक तथा राकेश जी के आधुनिक मस्तिष्क की उपज है। नाटक का प्रारंभ कालिदास की जीवनभूमि से होता है, उसकी साहित्यिक प्रतिभा के कारण उसे राजकीय पुरस्कार मिलता है। वह अपनी संगिनी मल्लिका के आग्रह पर उज्जयिनी चला जाता है। द्वितीय अंक में मल्लिका के चरित्र पर प्रकाश पड़ता है और उसके हृदय में कालिदास के प्रति निहित भावना भी झलकती है। तृतीय अंक में पुनः कालिदास तथा मल्लिका का मिलन होता है, परंतु मल्लिका का वर्तमान बदल चुका है। इस अंक में त्रासदी का आभास होता है, इसका कथानक संक्षिप्त, चुस्त और ठोस है। इसका आदि, मध्य और अंत संतुलित है। कथावस्तु में अंतर-बाह्य संघर्ष विद्यमान है। कथावस्तु आरंभ, विकास, चरम-सीमा और अंतिम अवस्था है। नाटक चरम सीमा पर उस समय पहुँच जाता है, जब कालिदास मल्लिका के घर आकर लौट जाता है। कथावस्तु का अंत पाश्चात्य दृष्टिकोण पर आधारित है। इस प्रकार नाटक की कथावस्तु उत्पाद्य है, यह किसी प्रकार की शास्त्रीय मान्यताओं पर आधारित नहीं है। इसके बावजूद इसमें स्वाभाविकता, रोचकता, सरलता, उत्सुकता तथा आकर्षक कथानक के गुण विद्यमान हैं।

किसी भी नाटक में पात्रों का होना अनिवार्य है। नाटक का प्रधान पात्र नायक कहलाता है, नायक की प्रिया अथवा सहचरी नायिका कहलाती है। इसके अतिरिक्त कई अन्य पात्र होते हैं, जो नाटक के कार्य-व्यापार में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इन सभी पात्रों को प्रमुख पात्र तथा गौण पात्र की श्रेणी में रख सकते हैं। आलोच्य नाटक में बारह पात्र हैं- मल्लिका, कालिदास, अंबिका, विलोम, दंतुल, मातुल, अनुस्वार, अनुनासिक, रंगिनी, संगिनी, निक्षेप और प्रियंगुमंजरी। इनमें मल्लिका, कालिदास, अंबिका, विलोम, मातुल, निक्षेप और प्रियंगुमंजिरी प्रमुख पात्र तथा शेष गौण पात्र हैं। मल्लिका और कालिदास नाटक के आधार स्तंभ हैं, संपूर्ण कथानक इन्हीं के आसपास घटित होता है। कालिदास नाटक का नायक है, वह एक

भावुक हृदयी कवि, संवेदनशील, असहिष्णु तथा ईर्ष्यालु भी है। विलोम कालिदास का विरोधी पात्र है, उसके चरित्र में उदारता, करुणा-भाव, शिष्टता तथा आतिथ्य भाव विद्यमान है। मल्लिका का चरित्र एक समर्पित नारी का है, वह कालिदास से सच्चा प्रेम करती है इसलिए उसका भला चाहती है। वह उद्दात्त, गुण-शील, परिस्थितियों से संघर्ष
करने वाली नारी है। अंबिका का चरित्र भी विश्वसनीय है, हाव सदैव कालिदास का विरोध करती है। प्रियंगुमंजरी के चरित्र में राजयोचित गर्व विद्यमान है। शेष चरित्र गौण हैं तथा उनका स्वभाविक चित्रण किया गया है। संक्षेप में, पात्र एवं चरित्र चित्रण की दृष्टि से यह एक सफल नाटक है। सभी पात्र अपनी वास्तविकता का आभास करवाते हैं, कहीं भी बनावटीपन नजर नहीं आता।

संवाद अथवा कथोपकथन नाटक के प्रमुख आधार स्तंभ होते हैं। नाटक का निर्माण संवादों द्वारा ही होता है, कहानी या उपन्यास आदि में लेखक स्वतंत्र रूप से संवादों को छोड़कर भी अपने भावों तथा विचारों को व्यक्त कर सकता है, लेकिन नाटककार को पूर्णतः संवादों पर ही निर्भर रहना पड़ता है। नाटक संवाद के मेरुदंड होते हैं, बिना चुस्त संवाद योजना के कोई नाटक सफल नहीं हो सकता। संवाद प्रायः सरल तथा संक्षिप्त होने चाहिए और नाटक में तो यह अत्यंत आवश्यक है। नाटक एक साहित्यिक विधा ना होकर एक रंगमंचीय व्यापार है, उसकी पूर्णतः अभिव्यक्ति रंगमंच पर अभिनीत होने के उपरांत होती है। अतः इसके लिए सरल तथा संक्षिप्त संवादों का होना अनिवार्य है। आषाढ़ का एक दिन नाटक में सरल, सहज, चुस्त तथा सार्थक संवाद हैं, इनके द्वारा कथानक में गतिशीलता आयी है, दीर्घ संवादों का विधान कम ही है, परंतु जहां कहीं बड़े संवाद हैं, वहाँ परिस्थितियों के अनुकूल हैं, इस नाटक में संक्षिप्त तथा सरल संवादों का प्रयोग हुआ है, यथा-

"मल्लिका: परंतु आज ये लोग यहाँ किसलिए आए हैं।

अंबिका: ना जाने किसलिए आए हैं।

मल्लिका: मां तुमने बात नहीं बताई।

अंबिक: अग्निमित्र आज लौट आया है।

मल्लिका: लौट आया है? कहां से?

अंबिका: जहां मैंने उसे भेजा था।"[4]

इस संवाद में सरलता तथा सहजता विद्यमान है, साथ ही वातावरण एवं परिस्थितियों का भी आभास होता है। मल्लिका तथा निक्षेप का निम्न संवाद भी सफल तथा श्रेष्ठ है-

निक्षेप: अब कैसा है अंबिका का स्वास्थ्य?

मल्लिका: वैसे ही ज्वर आता है अभी।

निक्षेप: पहले से कुछ भी अंतर नहीं पड़ा?

मल्लिका: लगता तो नहीं।

निक्षेप: दो वर्ष से निरंतर एक सा ज्वर। वास्तव में अंबिका बहुत चिंता करती है।

मल्लिका: औषधि भी ठीक से नहीं खातीं।

निक्षेप: तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है?

मल्लिका: ठीक है।[5]

इस संवाद में भी सहजता तथा कोमलता विद्यमान है, दीर्घ संवादों के भी अनेक उदाहरण नाटक में हैं, जो पूरी तरह सफल कह जा सकते हैं, यथा-

कालिदास: संभवतः पहचानती नहीं हो और न पहचानना ही स्वभाविक है, क्योंकि मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ जिसे तुम पहले पहचानती रही हो। दूसरा व्यक्ति हूँ और सच कहूँ तो वह देखती हूँ जिसे मैं स्वयं नहीं पहचानता..... तुम इस तरह जड़-सी क्यों खड़ी हो? मुझे देखकर बहुत आश्चर्य हुआ?

मल्लिका: आश्चर्य?.... मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा है कि तुम हो, और मैं जो तुम्हें देख रही हूं, वास्तव में मैं मैं ही हूं।[6].... वस्तुतः यह कहा जा सकता है कि संवाद योजना की दृष्टि से यह एक सफल नाटक है। अधिकांश संवाद सरल, सहज तथा संक्षिप्त हैं। दीर्घ संवादों का भी विधान है परंतु भावानुकूल होने के कारण ये मंच पर बाधा पैदा नहीं करते। अपितु नाटक में प्रवाह का निर्माण करते हैं।

देशकाल तथा वातावरण का सृजन किए बिना नाटक अपने उद्देश्य तक नहीं पहुंच सकता। नाटक का वातावरण दो तरह का होता है- आंतरिक और बाह्य। आंतरिक वातावरण से तात्पर्य पात्रों की मानसिक स्थिति से है और बाह्य वातावरण में युग, काल, प्रदेश और प्राकृतिक परिदृश्य आता है। परिवेश निर्माण के लिए कुछ विशेष शब्द-संकेत या उच्चारण ढंग से काम लिया जाता है। नाटक की घटनाओं में वास्तविकता मंडित करने के लिए देशकाल और वातावरण अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। रंगमच पर नाटक के अभिनय के समय उसे सजीव और यथार्थ बनाने के लिए वातावरण अपेक्षित है। वातावरण की सृष्टि से नाटक की घटनाएं विश्वसनीयता प्राप्त करती हैं। 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में राकेश जी ने वातावरण और देशकाल की ओर विशेष ध्यान दिया है, इस नाटक में ऐसे दृश्य नहीं हैं जिनके लिए विशेष प्रकार की वेशभूषा जुटानी पड़े, फिर भी कालिदास के समय का वातावरण निर्माण करने के लिए विशेष प्रकार की साज-सज्जा की आवश्यकता है। इसके लिए राकेश जी ने अनेक संकेत दिए हैं। कतिपय उदाहरण द्रष्टव्य हैं- "एक साधारण प्रकोष्ठ। दीवारें लकड़ी की हैं, परंतु निचले भाग में चिकनी मिट्टी से पोती हुई है। बीच-बीच में गेरू से स्वास्तिक चिन्ह बने हैं। सामने के द्वार अंधेरी ड्योढ़ी में खुलता है। उसके दोनों ओर छोटे-छोटे ताक हैं जिनमें मिट्टी के बुझे दीए रखे हैं।" उपरोक्त उदाहरण से मल्लिका के स्वच्छ तथा निर्मल घर का आभास होता है नाटक में और भी अनेक स्थानों पर वातावरण निर्माण का परिचय दिया गया है, यथा-

"वर्षा और मेघ गर्जन का शब्द। पर्दा उठने पर वही प्रकोष्ठ। एक दीपक जल रहा है। प्रकोष्ठ की स्थिति में पहले से बहुत अंतर दिखाई देता है। अब सब कुछ जर्जर और अस्त व्यस्त है"[7] इस प्रकार संपूर्ण नाटक में विभिन्न प्रकार के रंग-संकेतों का निर्माण राकेश जी ने सफलतापूर्वक किया है। सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों का नाटक में विशेष उल्लेख नहीं है, परंतु राजनीतिक अस्थिरता एवं अराजकता के संकेत अवश्य मिल जाते हैं। तत्कालीन वातावरण का आभास स्पष्ट झलकता है। सभी प्रकार की परिस्थितियों का उल्लेख संवादों के माध्यम से हुआ है, प्रियंगु और मल्लिका के बीच का निम्न संवाद कश्मीर की स्थिति को स्पष्ट करता है- "परंतु इतना अवकाश कहाँ है? कश्मीर की राजनीति इतनी अस्थिर है कि हमारा एक-एक दिन वहाँ से दूर रहना कई-कई समस्याओं को जन्म दे सकता है।"[8] अतः कहा जा सकता है कि मोहन राकेश जी ने आलोच्य नाटक में देशकाल तथा वातावरण का निर्माण किसी बँधी हुई परिपाटी से न करके अलग ढंग से किया है। देशकाल और वातावरण की दृष्टि से यह एक सफल नाटक है।

किसी भी नाटक की सफलता के लिए सरल, सहज तथा चुस्त भाषा का होना अनिवार्य है। भाषा भावाभिव्यक्ति का सशक्त और महत्वपूर्ण माध्यम है। नाटक एक दृश्य विधा है जो मंच पर अभिनीत होने के उपरांत पूर्ण होती है, इसे मंच पर पात्रों द्वारा अभिनीत किया जाता है। अतः सरल और सहज भाषा में लिखा गया नाटक मंचीय दृष्टि से सफल रहता है। नाटक की भाषा उपन्यास, कहानी या अन्य साहित्यिक विधाओं से भिन्न होती है। नाटक क्रियाशील भाषा द्वारा ही अपनी अभिव्यक्ति प्राप्त करता है। जब शब्द क्रियाएं मिलकर एक हो जाती हैं, तभी नाटक का वास्तविक अर्थ उद्घाटित होता है तथा दर्शक को नाटक के वास्तविक अर्थ का ज्ञान होता है। 'आषाढ़ का एक दिन नाटक'की भाषा स्वाभाविक, सरल तथा सटीक है। ऐतिहासिक वातावरण प्रधान होने के कारण नाटक में राकेश जी ने संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग किया है, यथा- "नील कमल की तरह कोमल

और आर्द्र, वायु की तरह हलका और स्वप्न की तरह चित्रमाय! मैं चाहती थी उसे अपने में भर लूँ..... मेरा तो शरीर भी निचुड़ रहा है माँ! कितना पानी इन वस्त्रों में पिया है ओह!"[9]

मोहन राकेश जी ने अपने इस नाटक में एक विशिष्ट नाट्य भाषा का प्रयोग किया है, संपूर्ण नाटक में एक भी शब्द निरर्थक नहीं। नाटक की भाषा पूर्ण रूप से साहित्यिक है। लाक्षणिकता, प्रसंगानुकूलता, सरलता, सहजता तथा चित्रात्मकता आदि उनकी भाषा के आधारभूत गुण हैं। मुहावरों के प्रयोग से सौंदर्य को द्विगुणित किया है- "मेरे लिए धर्म संकट खड़ा हो गया कि अनुनय करता हुआ आपके पीछे-पीछे जाऊं या अभ्यागतों को देखूँ।" नाटक में सभी स्थानों पर भाषा का तेवर प्रसंग और पात्रों की मनोदशा के साथ बदलता है, तर्क-वितर्क भी भाषा में ओज गुण है, तो वहीं माधुर्य तथा प्रसाद गुण भी विद्यमान है। कई स्थानों पर भाषा पैनी तथा कहीं-कहीं बेहद सरल तथा सहज है। यथा- "आज वर्षों के बाद तुम लौट कर आए हो सोचती थी तुम आओगे तो उसी तरह मेघ घिरे होंगे, वैसा ही अंधेरा सा दिन होगा, वैसे ही एक बार वर्षा में भीगूँगी।"[10] *इस प्रकार उपरोक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि भाषा की दृष्टि से आषाढ़ का एक दिन एक सफल रंग नाटक है।*

संसार में प्रत्येक कार्य का कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है, नाट्य रचना का भी कोई ण कोई उद्देश्य ज़रूर रहता है। मोहन राकेश ने 'आषाढ़ का एक दिन' में दो विरोधी सीमांतो के बीच छटपटाती तथा विवश नारी का चित्रण किया है, साथ ही पुरुष के अभाव के कारण नारी की दयनीय स्थिति को उजागर किया है। मल्लिका कालिदास तथा विलोम जैसे विरोधी पात्रों के बीच पिसती है। दोनों मल्लिका से प्रेम करते हैं, एक मल्लिका से सच्चा तथा भावनात्मक स्तर का प्रेम करता है तथा दूसरा शारीरिक स्तर पर उसे चाहता है। कालिदास सच्चे प्रेम के बावजूद मल्लिका को प्राप्त नहीं कर पाता, परंतु विलोम की कुटिलता मल्लिका को प्राप्त कर लेती है, वह मल्लिका का शरीर तो जीत लेता है परंतु मन नहीं जीत पाता। कालिदास भी मल्लिका को आत्मिक-सुख और सच्चा प्रेम नहीं दे पाता, मल्लिका दोनों ओर से विफल होकर दुःख, पीड़ा और घुटन भरी भरा जीवन जीती है। इसके अतिरिक्त नाटककार ने यह भी स्पष्ट किया है कि राजाश्रय साहित्यकार की मानसिकता को कुंठित कर देता है। वे स्पष्ट करना चाहते हैं कि राजाश्रय प्राप्त करने के उपरांत साहित्यकार अपनी वास्तविक प्रतिभा से विहीन हो जाता है, उसकी मानसिकता यथार्थपरक नहीं रहती तथा वह भी राज्य वैभव के चक्कर में पड़ जाता है, जिससे कोई विशेष लाभ नहीं होता। इस तथ्य को नाटककार ने नाटक में मातुल के मुख से कहलवाया है, "मुझसे कोई पूछे तो मैं कहूंगा कि राज-प्रसाद में रहने से अधिक कष्टकर स्थिति संसार में हो ही नहीं सकती।"[11] *अभाव तथा विपन्नता व्यक्ति को तोड़कर रख देती है, जिस कारण वह वैभव आदि के पीछे भागता है, इसे कालिदास के द्वारा स्पष्ट किया है,-*

"मैं नहीं जानता था की अभाव और भर्त्सना का जीवन व्यतीत करने के बाद प्रतिष्ठा और सम्मान के वातावरण में जाकर मैं कैसा अनुभव करूंगा। मन में कहीं यह आशंका थी कि वह वातावरण मुझे छा लेगा और मेरे जीवन की दिशा बदल देगा..... और यह आशंका निराधार नहीं थी।"[12] *संक्षेप में कहा जा सकता है कि आलोच्य नाटक में नारी की पीड़ा तथा राज्याश्रय से साहित्यकार की कुंठित प्रतिभा का चित्रण करना प्रमुख उद्देश्य रहे हैं। इसके अतिरिक्त अन्य उद्देश्यों का भी प्रतिपादन नाटककार ने सफलतापूर्वक किया है।*

रंगमंच और नाटक का गहरा संबंध है, नाटक का वास्तविक स्वरूप मंच पर रूपायित होने में है, रंगमंच के बिना नाटक की कल्पना नहीं की जा सकती। 'आषाढ़ का एक दिन'पूर्णतः अभिनेय नाटक है, देश भर की अनेक नाट्य संस्थाओं तथा रंगमंचों पर इसका सफलतापूर्वक मंचन हुआ है। अभिनेयता के लिए आवश्यक सभी गुण इसमें विद्यमान हैं, इसका कथानक सरल, सहज तथा संक्षिप्त है। नाटक सरल ढंग से आगे बढ़ता है तथा चरम पर पहुंच कर समाप्त हो जाता है। नाटक में बारह पात्र हैं, परंतु मुख्य पात्रों की संख्या कम है, जिससे पात्रों के चयन में कोई परेशानी नहीं होती। इसके संवाद सरल तथा सहज हैं जो अभिनय की दृष्टि से पूर्णतया सफल हैं। इसके अतिरिक्त नाटककार ने नाटक में अनेक रंग संकेत दिए हैं। अतः कहा जा सकता है कि रंगमंच तथा अभिनय की दृष्टि से यह एक सफल नाटक है।

समग्रतः नाट्य रूप की दृष्टि से 'आषाढ़ का एक दिन' सुगठित यथार्थवादी नाटक है, इसकी लोकप्रियता का मूल कारण यह है कि इसमें विविध प्रकार के पारस्परिक संबंधों के माध्यम से प्रेम के अनेक रूपों को संप्रेषित किया गया है। यह मात्र मोहन राकेश की ही नहीं अपितु हिंदी नाट्य इतिहास की प्रमुख नाट्य रचना है, नाटकीय तत्वों की दृष्टि से यह पूर्ण सफल तथा श्रेष्ठ नाट्य-रचना है।

संदर्भ ग्रंथ

1. *तत्राधिकारिकमं मुख्यमंगं प्रासंगिकं विदुः*
   दशरूपकम, आ० धनंजय व्याख्याकार- भोला शंकर व्यास, पृष्ठ- 10
2. *प्रख्याततोत्पाद्यमिश्रत्व भेदात्त्रेधापि तात्त्रिधा।*
   प्रख्यातभितिहासाडदेरुत्पाद्यम कविकल्पितम॥
   दशरूपकम, आ० धनंजय 1/15, *व्याख्याकार- भोला शंकर व्यास, पृष्ठ-* 11
3. *आरंभ-यत्न-प्राप्याशा-नियतापि-फलागमाः।*
   नाट्यदर्पणम- रामचन्द्र गुणचंद्र (*प्रथमो विवेकः*) 37/34
   हिन्दी नाट्य दर्पण- सं० डॉ० नगेन्द्र, पृष्ठ- 84
4. *आषाढ़ का एक दिन- मोहन राकेश,राजपाल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करन*-2000, *पृष्ठ*-11
5. *वही- पृष्ठ-* 50
6. *वही-पृष्ठ* ,95-96
7. *वही- पृष्ठ*,05
8. *वही- पृष्ठ*-49
9. *वही-पृष्ठ*-68
10. *वही-पृष्ठ*-8
11. *वही-पृष्ठ-* 47
12. *वही-पृष्ठ*-99